B.Sc. Yoga (Second year)

Paper-I Yoga and Physical Culture

सम्प्रज्ञात समाधि और इसके भेद

(Concept of Sampragyat Samadhi & it's kinds)

डॉ. राम किशोर सहायक आचार्य (योग)

स्कूल ऑफ हेल्थ साइंसेज़

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

सम्प्रज्ञात् समाधि की अवधारणा

(Concept of Sampragyat Samadhi)

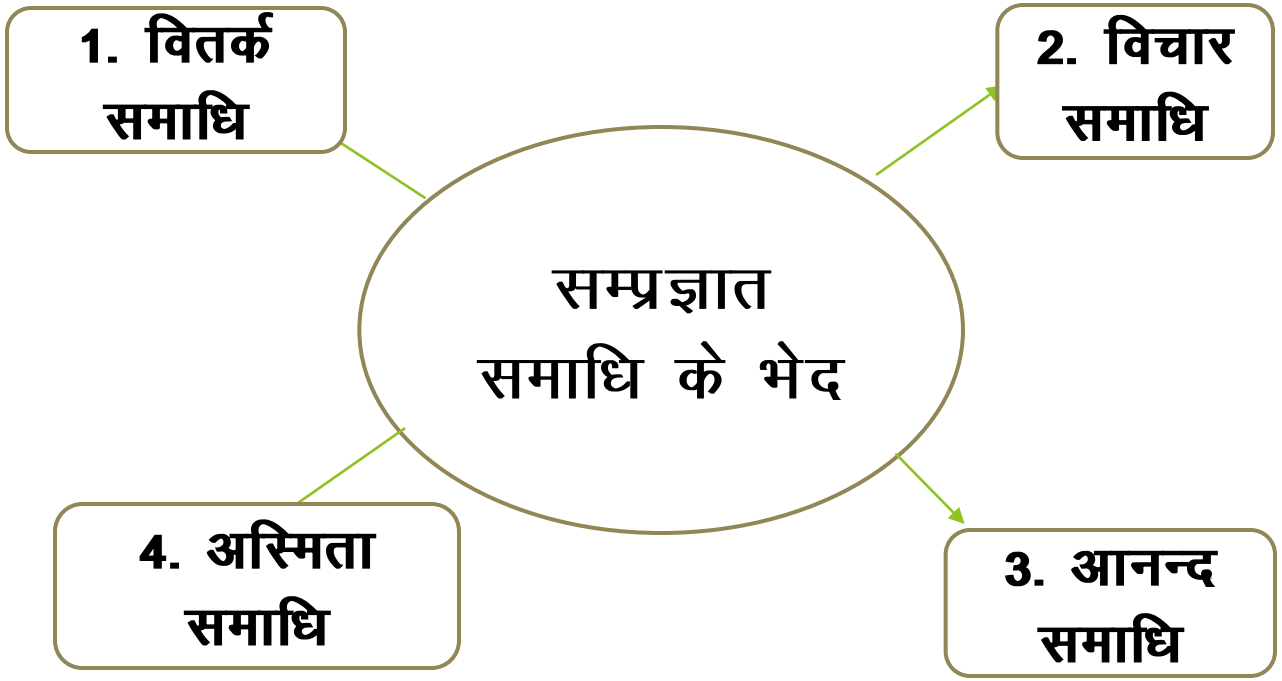

वितर्कविचारानन्दास्मितारूपानुगामात् सम्प्रज्ञातः। योगसूत्र 1/17

समाधि

(Concept of Sampragyat Samadhi)

1. ग्रहण :
अन्तःकरण और इन्द्रियाँ

चित्त

1. ग्राह्यः
पंचभूत और इनके विषय

ग्रहीता : पुरुष

क्षीणवृत्तेरभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्येषुतत्स्थतदञ्जनतासमापत्तिः। योगसूत्र 1/41

जिसकी सभी बाह्य वृत्तियाँ क्षीणता को प्राप्त हो चुकी हैं, ऐसे स्फटिक मणि के समान निर्मल चित्त का ग्रहीता अर्थात् पुरुष, ग्रहण अर्थात् अन्तःकरण और इन्द्रियाँ, ग्राह्य अर्थात् पंचमहाभूत और इनके विषय अर्थात् तनमात्राएं में स्थित और तादाकार हो जाना समाधि कहलाती है।

प्रकृति का परिणाम

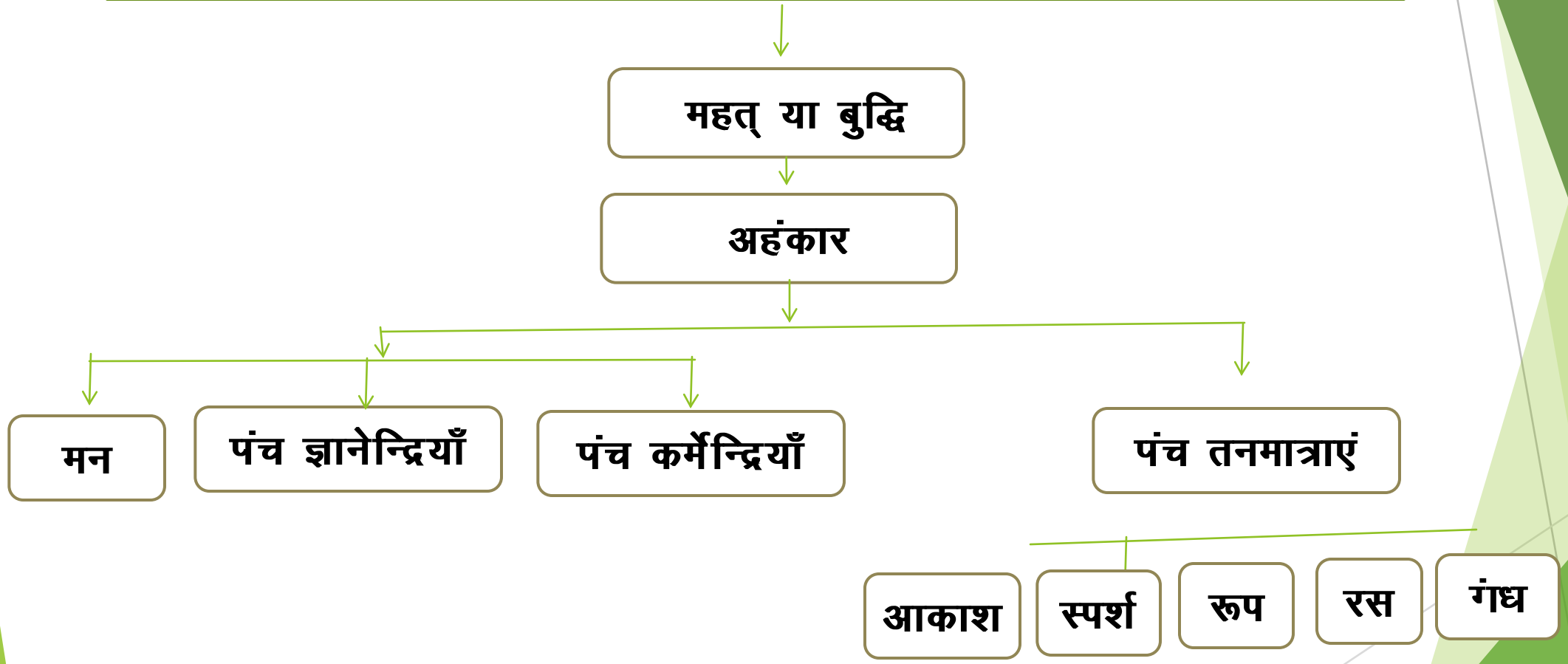
महत् या बुद्धि
अहंकार
मन
पंच ज्ञानेन्द्रियाँ
पंच कर्मेन्द्रियाँ
पंच तनमात्राएं
आकाश
स्पर्श
रूप
रस
गंध

वितर्क समाधि के भेद

1. सवितर्क समाधि

2. निर्वितर्क समाधि

तत्र 'शब्दार्थज्ञानविकल्पैः संकीर्णा सवितर्का समापत्तिः। योगसूत्र 1/42

उनमें 'शब्द, अर्थ और ज्ञान के विविध विकल्पों से मिली हुई समाधि सवितर्क है।

स्मृतिपरिशुद्धौ स्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासा निर्वितर्का। योगसूत्र 1/43

स्मृति के भली भाँति 'शुद्ध हो जाने पर अपने रूप से शून्य हुई की तरह केवल अर्थ का भान कराने वाली चित्त की अवस्था निर्वितर्क समाधि कहलाती है।

विचार समाधि के भेद

1. सविचार समाधि

2. निर्विचार समाधि

एतयैव सविचारा निर्विचारा च सूक्ष्मविषया व्याख्याता योगसूत्र 1/44

इसी से ही अर्थात् सवितर्क और निर्वितर्क समाधि के वर्णन से ही सूक्ष्म पदार्थों में की जाने वाली सविचार और निर्विचार समाधि वर्णित की गई है।

सूक्ष्मविषयत्वं चालिंगपर्यवसानम्। योगसूत्र 1/45

और सूक्ष्त विषय प्रकृति पर्यनत है।

निर्विचार समाधि का फल

अध्यात्म प्रसाद

ऋतम्भरा प्रज्ञा

निर्विचारवैशारद्येऽध्यात्म प्रसादः। योगसूत्र 1/47

निर्विचार समाधि में अत्यन्त प्रवीण हो जाने पर साधक अध्यात्म प्रसाद को प्राप्त करता है।

ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा। योगसूत्र 1/48

डस समय योगी की प्रज्ञा अर्थात् बुद्धि सत्य को धारण करने वाली होती है।

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR
आरोह तमसो ज्योति

धन्यवाद